



नॉस्टॉक अनुसंधान सूचना श्रृंखला: 1

नवागत पुस्तकें

(सारांश के साथ नई प्रविष्टियों की सूची)

सितम्बर (हिंदी विशेष), 2025



भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद
राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केंद्र
35, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली - 110001

©नॉस्ट्रॉक - आईसीएसएसआर

नवागत पुस्तकें: सारांश के साथ नए संकलन की सूची

नॉस्ट्रॉक टीम द्वारा संकलित एवं सम्पादित,

राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केंद्र, २६पृ.

(नॉस्ट्रॉक अनुसंधान सूचना श्रृंखला: १)

सितम्बर, २०२५

प्राक्कथन

“नवीन आगमन: सारांश सहित नई प्राप्तियों की सूची” के वर्तमान अंक में सितम्बर २०२५ माह में संसाधित की गई और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान प्रलेखन केंद्र (नॉर्डॉक) में उपयोग हेतु उपलब्ध नई पुस्तकों की सूची शामिल है। मुख्य पाठ में प्रविष्टियाँ शीर्षक के अनुसार वर्णानुक्रम में दी गई हैं, जिनके बाद ग्रंथसूची संबंधी विवरण और दस्तावेज़ का सारांश प्रस्तुत किया गया है। सरल संदर्भ हेतु, अंत में लेखक एवं कीवर्ड सूचकांक भी दिया गया है, जिसमें लेखक या कीवर्ड के सामने दर्शाया गया संख्या मुख्य सूची में “नवीन आगमन” की प्रविष्टि के क्रमांक को दर्शाती है। इच्छुक पाठक सूचीबद्ध शीर्षकों का अवलोकन पुस्तकालय में आकर कर सकते हैं।

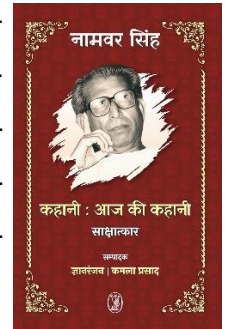
सुझावों का सदैव स्वागत है।

डॉ. एस.एन.चारि
निदेशक (प्रलेखन)

1 कहानी: आज की कहानी/ ज्ञानरंजन, कमला प्रसाद (संपादक) - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023; 96पृ.

54648

'कहानी : आज की कहानी' पुस्तक में प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह से कथाकार सुरेश पाण्डेय द्वारा की गयी एक लम्बी बातचीत है। यह साक्षात्कार नामवर जी के उल्लेखनीय साक्षात्कारों में से एक है। इसमें हिन्दी कथा-साहित्य पर बातचीत का 'नयी कहानी' से लेकर 'समान्तर कहानी आन्दोलन' के बाद तक का एक विस्तृत कैनवस मौजूद है। इसमें नामवर जी जो पहले कविता के आलोचक थे, कैसे कथा-समीक्षा के क्षेत्र में आये, इसका एक रोचक संवाद है। जिसमें वे बताते हैं कि जिस विधा को लेकर उनमें एक हिचक थी, वह कैसे उनके आत्मविश्वास में बदल गयी और कथा-समीक्षा काव्य-समीक्षा की तरह ही ज़रूरी बन गयी। इस साक्षात्कार में नामवर सिंह ने देशकाल के भीतर 'नयी कहानी' के 'नयी' विशेषण से लेकर निर्मल वर्मा सहित उससे जुड़े लेखकों के कथ्य, भाषा, शैली, अनुभव, द्वन्द्व-अन्तर्द्वन्द्व, औचित्य, परम्परा, प्रभाव, भिन्नता, प्रगतिशीलता, गैर-प्रगतिशीलता आदि के अन्वेषण और विश्लेषण का जो एक लम्बा ब्योरा सामने रखा है, उससे इस कथा आन्दोलन का पूरा वितान तो समझ में आता ही है, कई अनछुई अनदेखी बारीकियाँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। इस साक्षात्कार में वे 'नयी कहानी' से पहले और बाद की कहानियों पर भी अपना गहन विवेचन प्रस्तुत करते हैं, जिससे पीढ़ियों के कथा-लेखन का तुलनात्मक अध्ययन भी सामने आता है। इससे हम जान सकते हैं कि कोई कथाकार कैसे अपनी पिछली पीढ़ी से अलग है या किसी के लेखन में वह क्या दोष, जिससे उसका लेखन अपने समय का तो है लेकिन उसमें नयेपन के स्तर पर कुछ नया नहीं; और अगर प्रभाव या पुनरावृत्ति भी है तो वह क्यों और किस तरह। नामवर सिंह के इस साक्षात्कार से यह पहली बार जाना जा सकता है कि वे मुक्तिबोध की कहानियों पर चाहकर भी क्यों नहीं लिख पाये। उन्होंने क्यों कहा कि मुक्तिबोध और परसाई ही ऐसे दो लेखक थे, जिन्होंने आज़ादी के बाद के मोहभंग की पीड़ा को पहले-पहल साक्षात्कार किया; या यह कि भीष्म जी इधर जो यशस्वी हुए, उसका कारण उनकी कहानियाँ नहीं, उपन्यास हैं; या शिवप्रसाद सिंह और अमरकान्त पर वे जिस गहनता के साथ बात करते हैं, उसी गहनता के साथ सातवें दशक के कथाकारों पर बात करते हुए रेखांकित करते हैं कि ज्ञानरंजन जैसा समर्थ कथाकार लिखना बन्द कर दे तो कहानी के पाठक

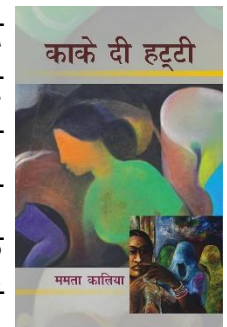


होने के नाते यह एक अभाव तो खटकता ही है; या यह कि 'काला रजिस्टर' कहानी रवीन्द्र कालिया की वापसी थी; या फिर यह कि इस दौर के महत्वपूर्ण कथाकार असगर वजाहत और स्वयं प्रकाश हैं जो कहानी की सीमा को समझते हैं। इस तरह देखें तो कहानी: आज की कहानी एक ऐसी पुस्तक है जिसमें प्रेमचन्द से लेकर उदय प्रकाश तक की चर्चा है। और हिन्दी कथा-साहित्य पर यह मात्र एक पुस्तक नहीं, एक दस्तावेज़ भी है जिससे कथाप्रेमी बहुत कुछ जानना, सीखना तो चाहेंगे ही, सदा साथ भी रखना चाहेंगे।

2 काके दी हट्टी/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015; 160पृ.

54649

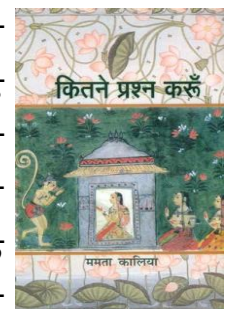
ममता कालिया की कहानियाँ नई कहानी के विस्तार से अधिक उसका प्रतिवाद हैं। सातवें दशक की कहानी में संबंधों से बाहर आने की चेतना स्पष्ट है। राजेन्द्र यादव नई कहानी को 'संबंध' को आधार बना कर ही समझने और परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। ममता कालिया अपनी पीढ़ी के अन्य कहानीकारों की तरह ही इसे समझने में अधिक समय नहीं लेतीं कि अपने निजी जीवन के सुख-दुख और प्रेम की चुहलों से कहानी को बाँधे रख कर उसे वयस्क नहीं बनाया जा सकता। उनकी कहानियाँ स्त्री-पुरुष संबंधों को पर्याप्त महत्व देने पर भी उसी को सब कुछ मानने से इनकार करती हैं। वे समूचे मध्यवर्ग की स्त्री को केन्द्र में रखकर जटिल सामाजिक संरचना में स्त्री की स्थिति और नियति को परिभाषित करती हैं। उनकी स्त्री इसे अच्छी तरह समझती है कि अपनी आज़ादी की लड़ाई को मुल्क की आज़ादी की लड़ाई की तरह ही लड़ना होता है और जिस कीमत पर यह आज़ादी मिलती है, उसी हिसाब से उसकी कद्र की जाती है।



3 कितने प्रश्न करूँ/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015; 78पृ.

54650

रामकथा और काव्य को मैं इतिहास नहीं मानती। मैं इसे एक अनुपम आख्यान मानती हूँ। पहले संस्कृत, बाद में अवधी में इसकी रचना और पुनर्रचना ने यह भलीभाँति किया है कि साहित्य में मानवीकरण की अद्भुत सामर्थ्य है। भारतीय जनमानस पर यह काव्याख्यान अपनी ऐसी अमिट छाप डाल चुका है कि इसकी हर पंक्ति सूक्ति बन गई है। और तो और रामायण और मानस के पाठक दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि राम और सीता के जीवन का चक्र इसी तरह चला था। फिर भी यह कवि की शक्ति है कि हर प्रसंग अपने आप में स्वयंसिद्ध, स्वप्रमाणित सप्राण और सुसंगत है। इसलिए आज भी विवाह के अवसर पर 'बियाह' गाया जाता है तो राम विवाह बावजूद इसके कि विवाहित राम सुखी पुरुष नहीं थे। इसी तरह नवविवाहितों को सराहते हुए कहते हैं कैसी राम सीता

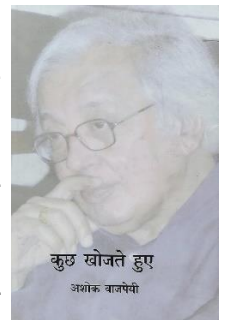


की जोड़ी है। राम सीता की जोड़ी दुखी दाम्पत्य का जीता-जागता दस्तावेज रही है। रामकथा और राम-काव्य के पात्र पाठक को लगातार नयी व्याख्या और विवेचना के लिए ललकारते प्रतीत होते हैं। एक चरित्र में अनेक मोड़ आते हैं। दिक्कत तब आती है जब ये पात्र स्वतन्त्र विकास करने लगते हैं क्योंकि सबको राम की मर्यादा के फ्रेम में फिट बैठना होता है। केन्द्रीय चरित्र की स्थापना में होम हुए पात्रों में सर्वोपरी स्थान सीता का है। सीता के प्रति न्याय की चिन्ता न कवि करता है न पति। राम-काव्य का सबसे सशक्त पात्र संघर्ष की जगह सन्ताप की प्रतिमूर्ति नज़र आता है। स्त्री-शिक्षा के प्रचाए-प्रसार के साथ नवीन चेतना का उद्भव हुआ। बीसवीं सदी में समाज में स्त्री की अवस्थिति पर गहन तथा व्यापक विचार-विमर्श का वातावरण बना। समकालीन स्त्री-विमर्श के सरोकारों के तहत सीता का चरित्र, उसके प्रति समाज और उसके जीवन-साथी का आचरण बार-बार पुनर्विवेचना की माँग कराता है। राम-काव्य केवल हाथ जोड़कर, आँख मूँदकर सुन लेनेवाला आख्यान नहीं है वरन् यह हमसे अवलोकन, पुनरावलोकन और बारम्बार अनुसंधान की अपेक्षा रखता है। सीता के वैवाहिक जीवन की विषमता, वेदना और व्याघात ने मुझे बहुधा सोचने पर बाध्य किया है कि उसे अबला माना जाय अथवा सबला। अबला मान लेने से राम काव्य को ज्यों का त्यों स्वीकार करना सरल हो जाता है। अबला सीता की वही करुण कहानी है कि उसके 'आँचल' में है दूध और आँखों में है पानी। हर हाल में वह पति की सहधर्मचारिणी है, पतिव्रता है। आदर्शवादियों के लिए स्त्री के ये सर्वोच्च गुण हैं

4 कुछ खोजते हुए/ वाजपेई, अशोक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010; 730पृ.

54651

कुछ खोजते हुए' अशोक वाजपेयी की किसी एक कविता का शीर्षक नहीं है, बल्कि यह उनके काव्य-चिंतन और जीवन-दृष्टि को दर्शाता है, जो उनकी कविताओं में सतह से उठकर गहराई में जाने, अनजाने को जानने, और समय, इतिहास व सच्चाई की बहुलता को तलाशने की प्रक्रिया है, जिसमें वे जीवन की अपूर्णताओं और उलझनों के साथ जुड़कर एक अटूट यात्रा का अनुभव करते हैं। यह उनकी कविताओं की 'प्रश्नाकुलता' और 'बेचैनी' को भी दिखाता है, जो उन्हें 'शहर अब भी संभावना है', 'कहीं नहीं वहीं' जैसी रचनाओं की ओर ले जाती है, जहाँ वे आम लोगों के मर्मस्पर्शी जीवन से जुड़कर अर्थ खोजते हैं।



5 खांटी घरेलू औरत/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004; 104पृ.

54652

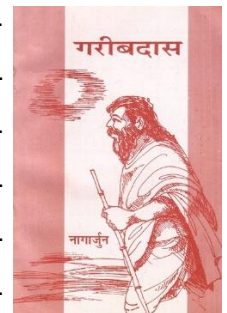
एक लेखक का रचाव और सृजन-माटी जिन तत्वों से बनती है उनमें गद्य, पद्य और नाट्य की समवेत सम्भावनाएँ छुपी रहती हैं। ममता कालिया ने अपनी रचना-यात्रा का आरंभ कविता से ही किया था। इन वर्षों में वे कथाजगत में होने 56 के बावजूद कविता से अनुपस्थित नहीं रही हैं। प्रस्तुत कविता-संग्रह 'खाँटी घरेलू औरत' उनकी इधर के वर्षों में लिखी गई ताज़ा कविताओं को सामने लाता है। खाँटी घरेलू औरत उनके जेहन में महज़ 1 एक पात्र नहीं वरन् एक विराट प्रतीक है जीवन के उस फ्रेम का जिसमें हर्ष और विषाद, आल्हाद और उन्माद, प्रेम और प्रतिरोध, सुख और असंतोष कभी अलग तो कभी गड़ड़-मड़ड़ दिखाई देते हैं। शादी की अगली सुबह हर स्त्री खाँटी घरेलू की जमात में शामिल हो जाती है। इस सच्चाई में ही दाम्पत्य का सातत्य है। ममता कालिया की कविताओं की अंतर्वस्तु हमेशा उनका समय और समाज रही है। सचेत संवेदना, मौलिक कल्पना, अकूत ऊर्जा और अचूक दृष्टि से तालमेल से ममता का कविजगत निर्मित होता है। इन रचनाओं में जीवनधर्मिता और जीवन में संघर्षधर्मिता का स्वर सर्वोपरि है। इसलिये ये कविताएँ संवाद भी हैं और विवाद भी। इनमें चुनौती और हस्तक्षेप, स्वीकार और नाकार, मौन और सम्बोधन, सब सम्मिलित हैं। विवाह और परिवार के वर्चस्ववादी चौखटे, स्त्री की नवचेतना से टकरा कर दिन पर दिन कच्चे पड़ रहे हैं। स्त्री और पुरुष की पारस्परिकता एक अनिर्णीत शाश्वतता है जिसमें समता और विषमता घुली मिली रहती हैं। खाँटी घरेलू औरत इन सब स्थितियों का जायज़ा लेती है।



6 गरीबदास/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010; 150पृ.

54653

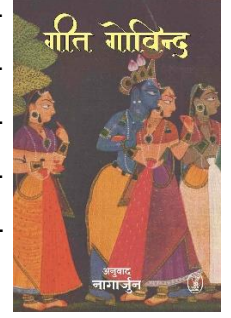
नागार्जुन का उपन्यास 'गरीबदास' उनके ग्यारहवें और अंतिम उपन्यासों में से एक है, जो संत गरीबदास पर आधारित है और नागार्जुन के विचारों, खासकर ग्रामीण जीवन, सामाजिक यथार्थ और भक्ति के संगम को दर्शाता है, जिसमें गरीबदास का किरदार लेखक के प्रतिनिधि के रूप में उभरता है, जो कबीर-परंपरा से जुड़ा है। यह उपन्यास केवल संत की कहानी नहीं, बल्कि नागार्जुन की अपनी इच्छाओं और साहित्यिक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब भी है, जिसमें कबीर के दर्शन और उनकी वाणी का महत्व दिखाया गया है।



7 गीत गोविन्द/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023; 62पृ.

54654

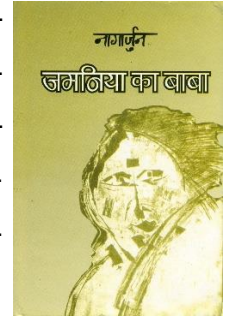
‘गीतगोविंद’ संस्कृत कवि जयदेव द्वारा रचित एक अनुपम काव्य ग्रंथ है, जिसमें राधा-कृष्ण की केलि-कथाओं तथा उनकी अभिसार-लीलाओं के अत्यंत रसमय चित्रण के साथ ही प्रेम के सभी भारतीय रूपों का बड़ी तन्मयता और कुशलता के साथ वर्णन किया गया है। समग्र संस्कृत साहित्य में इस कोटि की मधुर रचना दूसरी कोई नहीं। यह आध्यात्मिक श्रृंगार का अत्यंत मनोरम काव्य ग्रंथ है, जिसमें शब्द और अर्थ का मनोमुग्धकारी सामंजस्य है।



8 जमानिया का बाबा/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007; 140पृ.

54655

"जमानिया का बाबा", प्रसिद्ध लेखक और कवि नागार्जुन द्वारा लिखा गया एक हिंदी उपन्यास है, जो उनकी प्रगतिशील विचारधारा और ग्रामीण जीवन के चित्रण को दर्शाता है। भारतीय समाज के एक नासूर की चीर-फाड़ की है। जमानिया का बाबा धर्म के नाम पर समाज का शोषण करने वाले ऐसे वर्ग का प्रतिनिधि है जो जनता के अन्धविश्वासों और भोली निष्ठताओं का दोहन करके भय्याश जिन्दगी जीता है।



9 नागार्जुन: चुनी हुई रचनाएँ - खंड 1/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021; 1150पृ.

54656

नागार्जुन की चुनी हुई रचनाओं के इस पहले खण्ड में उनके चार कालजयी उपन्यास - रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरुण के बेटे और कुम्भीपाक संकलित हैं। इन उपन्यासों में नागार्जुन ने भारतीय जन-जीवन की महागाथा लिखी है। इन्हें एक साथ पढ़ना भारतीय समाज के उन लोगों के बीच से गुजरना है जो आज भी सामाजिक विसंगतियों के बीच शोषण झेलते हुए बेहतर जिंदगी के लिए संघर्ष कर रहे हैं।



10 नागार्जुन: चुनी हुई रचनाएँ - खंड 2/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021; 1150पृ.

54657

नागार्जुन की चुनी हुई रचनाओं के इस दूसरे खण्ड में नागार्जुन की चुनी हुई कविताओं का संकलन है। जिसमें एक दिलचस्प विशेषता यह भी है कि हिन्दी और मैथली कविताओं के साथ ही उनकी संस्कृत और बांग्ला कविताएँ भी पहली बार प्रकाशित हैं। इसमें उनकी सोच की एक-एक धड़कन है।



11 नागार्जुन: चुनी हुई रचनाएँ - खंड 3/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021; 1150पृ.

54658

नागार्जुन की चुनी हुई रचनाओं के इस तीसरे खण्ड में उनके निबंध, कहानियाँ, संस्मरण, भाषण, यात्रा वृत्तान्त, महत्वपूर्ण पत्र और साक्षात्कार संकलित हैं। इस खण्ड की ऐतिहासिकता इस बात में है कि नागार्जुन के विशाल लेखन का यह बड़ा भाग पहली बार संग्रह के रूप में सामने प्रस्तुत है। जो उनके रचनाकार व्यक्तित्व की सम्पूर्ण समझ के लिए नये दरवाजे खोलता है। नागार्जुन के निबंधों की विषय-वस्तु में विविधता है तो कहानियों में चरित्र की संवेदनात्मक बारीकियाँ। उनके संस्मरण सम्बन्धित व्यक्ति के व्यक्तित्व को समग्रता में लाने के साथ-साथ उसका मूल्यांकन भी करते हैं। भाषणों में प्रगतिशील विचार और सीधी सम्प्रेषणीयता है। यात्रा वृत्तान्तों में यात्री नागार्जुन द्वारा देश के रम्य और बीहड़ इलाकों के साहसिक सफर की स्मृतियाँ हैं। निजी पत्रों में दोस्तों के जीवन और उनकी मानसिक-पारिवारिक समस्याओं को लेकर चिंताएँ हैं, एक हद तक उनका समाधान भी। अक्सर इन पत्रों में यायावर नागार्जुन की घुमक्कड़ी के अगले पड़ाव की सूचना भी है। साक्षात्कार में हैं, उनकी दो टूक बातें।

नागार्जुन

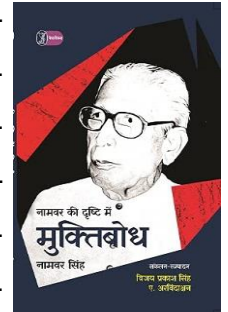
चुनी
हुई
रचनाएँ



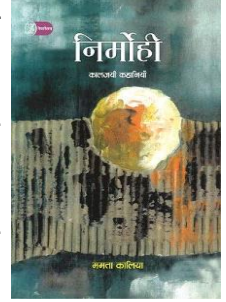
12 नामवर की दृष्टि में मुक्तिबोध/ सिंह, नामवर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021; 152पृ.

54659

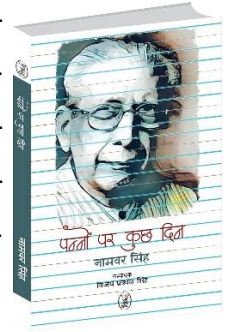
मुक्तिबोध की भाषा पर अनगढ़ता का आरोप लगाते समय इस बारे में सोच देखना चाहिए कि जिस तिलिस्मी दुनिया की सृष्टि वे कविता में कर ले जाते हैं वह क्या असमर्थ भाषा से कभी सम्भव है? वस्तुतः 'अँधेरे में' का खौफनाक काव्य-संसार समर्थ भाषा की ही सृष्टि है। मुक्तिबोध जब कहते हैं कि "बिम्ब फेंकती वेदना नदियाँ" तो वे एक तरह से उस कवि-कल्पना की ओर भी संकेत करते हैं जो अपनी अजस्र सृजनशीलता में बिम्ब फेंकती चलती है। वस्तुतः कवि की शक्ति कल्पना के उस वेग और विस्तार से मापी जाती है जिसे अंग्रेज़ी में 'स्वीप ऑफ़ इमेजिनेशन' कहते हैं; और कहना न होगा कि 'अँधेरे में' की कल्पना-शक्ति अपने समवर्ती समस्त कवियों में सबसे विकट और विस्तृत है। इसीलिए वे प्रगीतों के युग में भी महाकाव्यात्मक कल्पना के धनी और नाटकीय प्रतिभा के प्रयोगकर्ता हैं। वस्तुतः मुक्तिबोध की अभिव्यक्ति की अर्थवत्ता फटकल शब्द-प्रयोगों से नहीं आंकी जा सकती और न दो-चार बिम्बों अथवा भाव-चित्रों से मापी जा सकती है। उनकी अभिव्यक्ति की गरिमा का पता उस विराट बिम्ब-लोक से चलता है जो 'अँधेरे में' जैसी महाकाव्यात्मक कविता अपनी समग्रता में प्रस्तुत करती है।



ममता कालिया की कहानियाँ नयी कहानी के विस्तार से अधिक उसका प्रतिवाद हैं। सातवें दशक की कहानी में सम्बन्धों से बाहर आने की चेतना स्पष्ट है। राजेन्द्र यादव नयी कहानी को 'सम्बन्ध' को आधार बनाकर ही समझने और परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। ममता कालिया अपनी पीढ़ी के अन्य कहानीकारों की तरह ही इसे समझने में अधिक समय नहीं लेती कि अपने निजी जीवन के सुख-दुख और प्रेम की चुहलों से कहानी को बाँधे रखकर उसे वयस्क नहीं बनाया जा सकता। उनकी कहानियाँ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को पर्याप्त महत्व देने पर भी उसी को सब कुछ मानने से इनकार करती हैं। वे समूचे मध्य वर्ग की स्त्री को केन्द्र में रखकर जटिल सामाजिक संरचना में स्त्री की स्थिति और नियति को परिभाषित करती हैं। उनकी स्त्री इसे अच्छी तरह समझती है कि अपनी आज़ादी की लड़ाई को मुल्क की आज़ादी की लड़ाई की तरह ही लड़ना होता है और जिस कीमत पर यह आज़ादी मिलती है, उसी हिसाब से उसकी कद्र की जाती है। संरचना की दृष्टि से ममता कालिया की ये कहानियाँ उस औपन्यासिक विस्तार से मुक्त हैं जिसके कारण ही कृष्णा सोबती की अनेक कहानियों को आसानी से उपन्यास मान लिया जाता रहा है। काव्य-उपकरणों के उपयोग में भी वे पर्याप्त संयत और सन्तुलित हैं। वे सीधी, अर्थगर्भी और पारदर्शी भाषा के उपयोग पर बल देती हुई अकारण ब्यौरा और स्फीति से बचती हैं। भारतीय राजनीति में कांग्रेस के वर्चस्व के टूटने और नक्सलवाद जैसी परिघटना का कोई संकेत भले ही ममता कालिया की कहानियों में न मिलता हो, जैसा वह उनके ही अन्य समकालीन अनेक कहानीकारों में आसानी से लक्षित किया जा सकता है, लेकिन फिर भी अपनी प्रकृति में वे नयी कहानी की सम्बन्ध-आधारित कहानियों की तुलना में कहीं अधिक राजनीतिक हैं। देश में बढ़ी और फैली अराजकता एवं विद्रूपताओं से सबसे अधिक गहराई से स्त्री ही प्रभावित हुई है। यह अकारण नहीं है कि उनकी भाषा में एक खास तरह की तुर्शी है जिसकी मदद से वे सामाजिक विद्रूपताओं पर व्यंग्य का बहुत सधा और सीधा उपयोग करती हैं। नयी कहानी के जिन लेखकों को ममता कालिया अपने बहुत निकट और आत्मीय पाती हैं, इसे फिर दोहराया जा सकता है, वे परसाई और अमरकान्त ही हैं।



इन दो अलग-अलग कालखण्डों की डायरी से गुजरने पर ऐसा लगता है कि यह विद्यार्थी नामवर सिंह से शोधार्थी नामवर सिंह की यात्रा का एक संक्षिप्त साहित्यिक वृत्तान्त है। उनके एकान्त के क्षणों का चिन्तन, अपने मित्रों, गुरुओं तथा उस समय के उभरते हुए साहित्यकारों के साथ बौद्धिक-विमर्शसब कुछ इन दोनों डायरियों में दर्ज है। इन डायरियों को उस समय के साहित्यिक वातावरण का दर्पण भी कहा जा सकता है। बनारस और इलाहाबाद उस समय साहित्य, संगीत और कला की उर्वर भूमि थे। साहित्य की बहुत-सी प्रसिद्ध हस्तियाँ इन शहरों की देन थीं, जिनका इन शहरों से लगाव भी बराबर बना रहा। इन शहरों के उस कालखण्ड पर नज़र डालें, तो मशहूर ग्रीक कवि कवाफ़ी का यह वाक्य याद आता है- “हम किसी शहर में नहीं, समय विशेष में रहते हैं और समय?” ये शहर तो आज भी हैं, लेकिन वह समय, वे लोग, वह वातावरण अब पहले की तरह नहीं हैं। नामवर सिंह को बेहतर जानने और समझने की जिज्ञासा रखने वालों के लिए पन्नों पर कुछ दिन पुस्तक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हो सकती है।



- 15 पाँच बेहतरीन कहानियाँ - ममता कालिया/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013; 66पृ.

54662

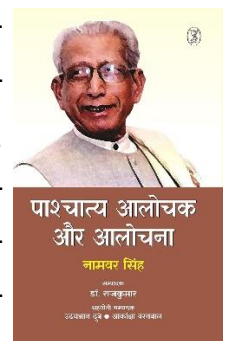
"पाँच बेहतरीन कहानियाँ" ममता कालिया द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है, जिसमें सामाजिक और मानसिक मुद्दों को संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है। इस संग्रह में महिला पात्रों के संघर्ष और भारतीय समाज की जटिलताओं को गहराई से उकेरा गया है।



- 16 पाश्चात्य आलोचक और आलोचना/ सिंह, नामवर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022; 288पृ.

54663

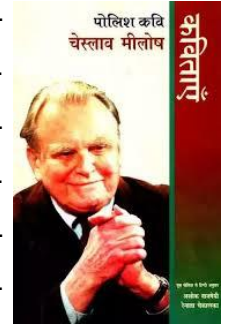
पाश्चात्य आलोचकों और आलोचना सिद्धान्तों पर हिन्दी में स्तरीय पुस्तकें ज़्यादा नहीं हैं। जो पुस्तकें हैं भी, वे पाश्चात्य आलोचना की अवधारणाओं को प्रायः अमूर्त रूप में प्रस्तुत करती हैं। विद्यार्थियों की क्या बिसात है, अच्छे-खासे विद्वान भी उनके निहितार्थों को ठीक से नहीं समझ पाते। ऐसी पुस्तक हिन्दी ही नहीं, अंग्रेज़ी में भी आसानी से नहीं मिलती जो इन अमूर्त अवधारणाओं को उदाहरणों के द्वारा बोधगम्य बनाकर समझा सके। आशा है कि यह पुस्तक इस आवश्यकता की पूर्ति कर पाने में समर्थ हो सकेगी।



17 पोलिश कवि चेस्लाव मीलोष/ वाजपेई, अशोक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 124पृ.

54664

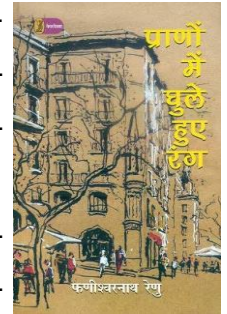
संसार में अनिवार्य रूप से मौजूद बुराई और मानवीय यातना को अपनी कविता के केन्द्र में रखनेवाले पोलिश कवि चेस्लाव मीलोष बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विश्व-कविता के अधिकतर उलझे परिदृश्य में एक अनिवार्य नाम रहे हैं। इस समय वे सम्भवतः विश्व-कविता के सबसे जेठे सक्रिय कवि हैं। अपनी जातीय ईसाई परम्परा से मीलोष ने मनुष्य में अनिवार्यतः मौजूद बुराई का तीखा अहसास पाया था। उसे पोलैण्ड में पहले नाज़ी और बाद में साम्यवादी तानाशाहियों द्वारा दमित-शोषित किये जाने के दुखद ऐतिहासिक अनुभवों ने मीलोष को इस बुराई को उसकी सारी विकृतियों और उसमें लोगों की दुर्भाग्यपूर्ण साझेदारी या उनके बारे में अवसरवादी चुप्पी के साथ नज़दीक से देखने-समझने का अवसर दिया। कविता उनके लिए इसके विरुद्ध संघर्ष की रणभूमि बनी।



18 प्राणों में घुले हुए रंग/ रेणु, फणीश्वर नाथ - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018; 232पृ.

54665

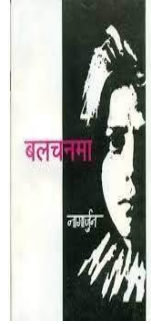
इस संग्रह में रेणु की इतनी विधाओं में लिखी गयी रचनाओं को एक साथ प्रकाशित करने का उद्देश्य यह है कि इस संग्रह के द्वारा पाठकों को रेणु की 'बहुमुखी प्रतिभा' से परिचय एवं उनकी अप्रकाशित-असंकलित यानी अप्राप्य रचनाओं से पाठकों का साक्षात्कार एक ही साथ हो। कहानी, रिपोर्टाज, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, पत्र और पटकथा-ये सात विधाएँ सात रंग की तरह हैं, जो एक-दूसरे से अलग होते हुए भी अभिन्न हैं। इन सभी के द्वारा रेणु के प्राणों में घुले हुए सभी रंग एवं भाव प्रकट हुए हैं। कुछ रंग उदास, मटमैले हैं, तो कुछ चटक, कुछ पीले तो कुछ टह-टह लाल, कहीं-कहीं सफेद रंग दूर तक फैला दिखाई देता है, तो कभी अँधेरे की तरह काला रंग मन में घर करने लगता है। ...रेणु की ये रचनाएँ जीवन के एक-एक भाव को, एक-एक रंग को...यानी कि जीवन को समग्रता के साथ देखती, परखती और प्रस्तुत करती हैं। रेणु के लिए कोई भी रंग खराब नहीं है, वे एक ऐसे बड़े चित्रकार हैं, जो हर रंग से अपने भावात्मक तादात्म्य को स्थापित करता है।



19 बलचनमा/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019; 172पृ.

54666

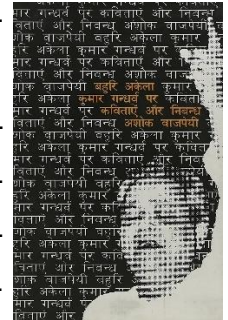
बलचनमा' के पिता का यही कसूर था कि वह जमींदार के बगीचे से एक कच्चा आम तोड़कर खा गया। और इस एक आम के लिए उसे अपनी जान गंवानी पड़ गई। गरीब जीवन की त्रासदी देखिए कि पिता की दुखद मृत्यु के दर्द से आँसू अभी सूखे भी नहीं थे कि उसी कसाई जमींदार की भैंस चराने के लिए बलचनमा को बाध्य होना पड़ा। पेट की आग के आगे पिता की मृत्यु का दर्द जैसे बिला गया! ...उस निर्मम जमींदार ने दया खाकर उसे नौकरी पर नहीं रखा था। उसने तो बलचनमा की माँ की पुश्तैनी जमीन के छोटे टुकड़े को गटक जाने के लिए गिद्ध-नजर रखी थी। ...अब बलचनमा बड़ा हो गया था... गाँव छोड़कर शहर भाग आया था... बेशक उसे 'अक्षर' का ज्ञान नहीं था, लेकिन 'सुराज', 'इन्किलाब' जैसे शब्दों से उसके अन्दर चेतना व्याप्त हो गई थी। और फिर शोषितों को एकजुट करने का प्रयास शुरू होता है शोषकों से संघर्ष करने के लिए। 'बलचनमा' प्रख्यात कवि और कथाकार नागार्जुन की एक सशक्त कथा-कृति और हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास।



20 बहुरि अकेला कुमार गन्धर्व पर कविताएँ/ वाजपेयी, अशोक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005; 116पृ.

54667

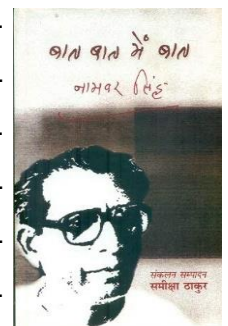
हिन्दी में यह पुस्तक अनूठी है : वह एक संगीतप्रेमी कवि-आलोचक की एक महान् संगीतकार को अनेक किस्तों में दी गई प्रणति है। उसमें गहरे विनय, उदग्र जिज्ञासा और सजग अभिभूति से अशोक वाजपेयी ने कुमार गन्धर्व के संगीत-संसार, उनकी दृष्टि और उनकी चेष्टा को भावप्रवण काव्यभूमि और उत्तेजक बौद्धिक आधार प्रदत्त किया है। कुमार गन्धर्व की पचत्तरवीं वर्षगाँठ पर कविताओं, निबंधों और बातचीत का यह संकलन विशेष रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।



21 बात बात में बात/ सिंह, नामवर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013; 352पृ.

54668

मैं अपने तई मानता हूँ कि आलोचक को दो भूमिकाएँ निभानी चाहिए। आलोचक वही काम करता है जो फौज में, जिसे 'सैपर्स एण्ड माइन्स' करते हैं, इंजीनियर करता है। फौज के मार्च करने से पहले झाड़-जंगल साफ करके नदी-नाले पर जरूरी पुल बनाते हुए फौज को आगे बढ़ने के लिए रास्ता तैयार करने का जोखिम उठाए, सड़क बनाए। साहित्य में इस रूपक के माध्यम से मैं कहूँ कि जहाँ विचारों, विचारधाराओं, राजनीतिक सामाजिक प्रश्नों आदि के बारे में उलझने हैं, वह अपने विचारों के माध्यम से थोड़ा सुलझाए, कोई बना-बनाया विचार न दे ताकि रचनाकारों को स्वयं अपने लिए सुविधा हो। ये मैं आलोचक के लिए 'सैपर्स एण्ड माइन्स' की भूमिका मानता हूँ क्योंकि आगे-आगे वही चलता है



और पहले वही मारा जाता है। दुश्मन आ रहा है तो जोखिम उठाने के लिए सबसे पहले मोर्चे पर वही बढ़ता है और ज़ख्मी होने का खतरा भी वही उठाता है। यह काम आलोचक करता है और उसे करना भी चाहिए। क्योंकि हम रचनाकारों के लिए रास्ता बनाने की कोशिश करते हैं। यह एक काम हुआ। दूसरा, रास्ता बनाने के साथ ही वह उनके साथ-साथ चलता भी है। वह रचनाकार का सहचर है। इसलिए आलोचक को 'सहृदय' कहते हैं। समान हृदय वाला। आलोचक को किसी की आलोचना करने से पहले उसी भावभूमि पर होने चाहिए जिस भाव भूमि पर पहुँचकर रचनाकार रचना कर रहा है। गुण दोष बाद में देखना चाहिए। लेकिन जिस लहर मान पर वह है, आप मन से वहीं पहुँचे। और वहीं पहुँचकर देखें कि सचमुच वो कहाँ है? कहाँ से बोल रहा है? निराला जी के शब्दों में वह किस कोठे से बोल रहा है ? इसलिए आलोचक-कर्म जो है मूलतः सहृदय का है। आलोचक न्यायाधीश नहीं है। है तो वह वकील और ऐसा वकील जो सफाई पक्ष का है, 'डिफेंस का है मुख्य रूप से, और डिफेंस का ऐसा ईमानदार वकील जो अपना केस लेकर आने वालों को सब बता देता है कि तुम्हारा केस कमजोर है, कहाँ हो ? कैसे हो? बावजूद इसके वे उसे बचाने की कोशिश करते हैं।

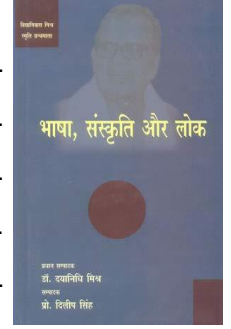
22 भविष्य का स्त्री विमर्श/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017; 54669
108पृ.

"भविष्य का स्त्री विमर्श" में स्त्रियों की अस्मिता पर उठते सावालों का कटाक्ष पूर्ण जवाब, स्त्रियों को सलाह कि वे अपने दर्द को बेचकर खुद को कमजोर साबित न करें, लेखिका का उनसे आग्रह है कि अपनी पीड़ा को पेशा न बनाए, किताब की शैली पाठकों को आकर्षित करने का माददा रखती हैं।



23 भाषा, संस्कृति और लोक/ सिंह, दिलीप - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015; 54670
204पृ.

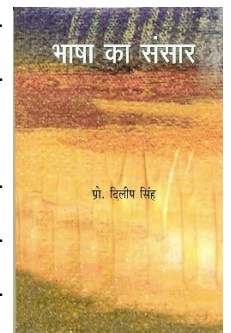
पं. विद्यानिवास मिश्र की प्रतिभा का प्रस्फुटन अनेकानेक स्रोतों में प्रवाहित है। उनकी प्रतिभा की सहजता और सौम्यता का कोई सानी नहीं। संस्कृत, हिन्दी और संस्कृति के मेल से उनका व्याकरणिक अध्ययन भी भारतीयता की पीठिका बन पाता है और उनके सृजनात्मक साहित्य में भाषा, आचरण और सभ्यता से आबद्ध मानुस-व्यवहार की वे सभी परतें छवि बन कर उभार पाती हैं जिनसे जीवन और समाज की गति अग्रगामी बनती है। प्रस्तुत पुस्तक में पंडित जी की इसी प्रतिभा के कतिपय पक्षों को छूने का प्रयास नये-पुराने लोगों ने किया है। आलेख तो एक बहाना है, पंडित जी की मानस-छवि को प्रतिबिंबित करने का परम्परा की नव्य व्याख्या करने वाले एक चिन्तक की आधुनिकता के कई कोणों को यहाँ पाठक महसूस कर सकेंगे। पंडित विद्यानिवास मिश्र और उनकी पत्नी श्रीमती राधिका देवी की पुण्य स्मृति में स्थापित 'विद्याश्री न्यास' की प्रकाशन योजना का यह पहला पुष्प है। भविष्य में 'व्याकरण-विमर्श', 'समसामयिक काव्य भाषा', 'अद्यतन भाषाविज्ञान' तथा 'संस्कृति, संदर्भ और भाषा', जैसे विषयों पर केन्द्रित पुस्तकें इस श्रृंखला में प्रकाशित करने की योजना है। कहना न होगा कि इन सभी बौद्धिक विमर्शों के प्रति पंडित जी का गहरा रुझान था। उनका लेखन इस बात की साफ-साफ गवाही देता है। पंडित विद्यानिवास मिश्र ने ज्ञान की शाखाओं को जिस मोड़ पर छोड़ा है उसके आगे की राह का संकेत देना भी वे नहीं भूले हैं। बड़े चिन्तक सम्भवतः इसीलिए लम्बे समय तक प्रासंगिक बने रहते हैं। पंडित जी के थोड़े-बहुत संकेतों के सहारे पुस्तक के आलेख संकलित किए या लिखे गये हैं। इसीलिए पंडित जी हर कहीं उपस्थित हैं - प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में। आधुनिक भाषावैज्ञानिक चिन्तन के व्यावहारिक पक्ष को यह किताब जगह-जगह विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाते हुए उजागर करती है। वैचारिक स्तर पर पुस्तक पठनीय है तो आत्मीय धरातल पर पंडित जी। के प्रति एक भावभीनी श्रद्धांजलि।



24 भाषा का संसार/ सिंह, दिलीप - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 179पृ.

54671

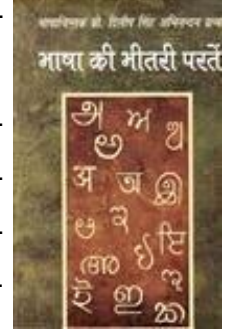
इस पुस्तक में भाषा, संप्रेषण और व्याकरण के जटिल रिश्तों की गाँठें भी खोली गई हैं। भाषा एक व्यवस्था है - इस सत्य को स्वीकारते हुए भी लेखक ने इस स्थापना पर अधिक बल दिया है कि भाषा कोई जड़ या रूढ़ व्यवस्था नहीं है। उसके साथ व्याकरण ही नहीं बोध और संप्रेषण का भी गहरा जुड़ाव है। संप्रेषण की क्षमता के लिए भाषा प्रयोग की उपयुक्तता की आवश्यकता होती है। इसे लेखक ने भाषा के समाज स्वीकृत विकल्पों के प्रयोग की क्षमता के रूप में व्याख्यायित किया है और इस पुस्तक द्वारा भाषा के बदलते परिप्रेक्ष्य को रूपायित करने का प्रयास किया है। इसके लिए उन्होंने भाषा क्या है, भाषा क्या



करती है तथा भाषा के लिए भाषाविज्ञान किस तरह विकसित हुआ है जैसे प्रश्नों पर अपने पाठक को सामने रखकर खुला चिंतन किया है।

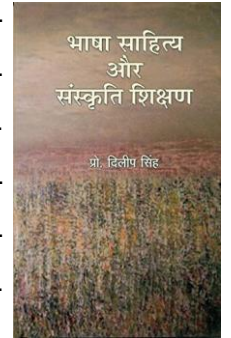
- 25 भाषा की भीतरी परतें: (भाषाचिन्तक प्रो. दिलीप सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ)/ सिंह, 54672
दिलीप - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012; 464पृ.

प्रो. दिलीप सिंह की सुविचारित कृतियों के रूप में व्यावसायिक हिन्दी, भाषा का संसार, हिन्दी भाषा चिन्तन, पाठ विश्लेषण, भाषा, साहित्य और संस्कृति शिक्षण, अन्य भाषा शिक्षण का बृहत् सन्दर्भ, अनुवाद की व्यापक संकल्पना जैसी उनकी विविध कृतियाँ सैद्धान्तिक भाषाविज्ञान से आगे बढ़कर अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान को हिन्दी में व्यवहारतः सम्भव कर दिखाने वाली कृतियाँ रही हैं। प्रस्तुत पुस्तक में साहित्यकारों, छात्रों, साथियों के सहारे सच्चे संस्मरण इस किताब में उभरे हैं। जो भाषा की गति को कही भी मंद नहीं पड़ने देते हैं।



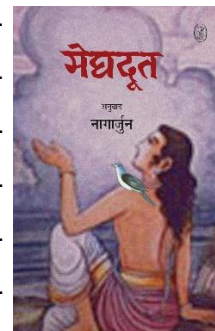
- 26 भाषा साहित्य और संस्कृति शिक्षण/ सिंह, दिलीप - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 54673
2007; 224पृ.

प्रो. दिलीप सिंह की यह मान्यता इस पुस्तक में व्यावहारिक रूप में प्रतिफलित हुई है कि भाषा शिक्षण द्वारा व्यक्ति के भाषा व्यवहार ही नहीं उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को धार दी जा सकती है। व्यक्तित्व विकास की इस प्रक्रिया में साहित्य शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि उससे व्यक्ति के संज्ञानात्मक और सोचने को कौशल को निखारा जा सकता है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह मान्यता है कि किसी भी कथन/अभिव्यक्ति/पाठ में साहित्य और भाषा के बहाने सामाजिक-सांस्कृतिक घटक पिरोए गए होते हैं जिनके उद्घाटन के बिना उसका पढ़ना-पढ़ाना अधूरा रह जाता है। अतः भाषा अध्ययन के रास्ते किसी समाज की संस्कृति तक पहुँचना कैसे संभव होता है यह सीखना-सिखाना बेहद महत्वपूर्ण है। इसमें संदेह नहीं यह पुस्तक इन लक्ष्यों की प्राप्ति को संभव बनाने में समर्थ है।



- 27 मेघदूत/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020; 98पृ. 54674

मेघदूत' में, विशेषतः पूर्वमेघ में कवि ने प्रकृति के बाह्यरूपों का चमत्कार दिखलाया है। परन्तु वह क्षण-भर के लिए भी मानवीय भावना को अपने शब्दशिल्प से पृथक् नहीं होने देता। मेघ को भी तो उसने मेघमात्र नहीं रहने दिया। मेघ यक्ष का साथी है, भाई है। उम्र में छोटा ही समझिए ! भाई का कुशल समाचार उसे भाभी तक पहुँचाना है। थकने पर वह पहाड़ों पर उतरकर सुस्ता लेता है, प्यास लगने पर नदियों का पानी पीता है। भारी हो उठता है, तो बरस बरस कर हल्का हो लेता है। मानसरोवर की तरफ जानेवाले हंस उसका साथी बनते हैं और हरिण उसे राह दिखाते हैं। नदियों से मेघ का प्रेम-सम्बन्ध है, यक्ष की हिदायत है कि वह उनकी उपेक्षा न करे; ज़रा देर हो तो हो, मगर अपनी प्रेयसियों का दिल न तोड़ना ! विरहजनित उनकी कृशता जैसे भी मिटे, वैसा करना



28 यहाँ से वहाँ/ वाजपेई, अशोक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 407पृ.

54675

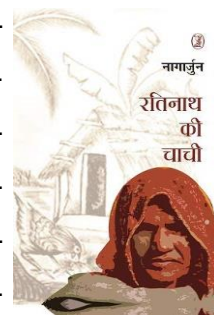
सभी लेखक यायावर होते हैं हालाँकि वे प्रायः इसे स्वीकार नहीं करते। पाठक भी लेखकों के साथ एक तरह की खानाबदोशी करते रहते हैं। अकसर उन्हें इसकी खबर नहीं होती। हम सभी 'यहाँ' से 'वहाँ' जाते रहते हैं, या उसकी कोशिश में लगे रहते हैं। हरेक का 'यहाँ' कुछ अलग होता है, कुछ समान : इसी तरह हरेक का 'वहाँ' भी कुछ अलग होता है, कुछ समान। मनुष्य होने का सुख और विडम्बना दोनों ही इस 'यहाँ' से 'वहाँ' में निहित हैं। हर यात्रा भौतिक नहीं होती। हम बैठे-बैठे भी यहाँ से वहाँ जा सकते हैं या पहुँच जाते हैं। इस आवाज़ाही का माध्यम कोई उपकरण या वाहन उतना नहीं होता जितना, मनुष्य का सम्भवतः सब से क्रान्तिकारी आविष्कार, भाषा हम जो भी कर रहे हों, भाषा से जूझ रहे हों या कि उससे खेल रहे हों या कि उसमें अन्तर्भुक्त मौन को सुनने-पकड़ने का अभिशप्त यत्न कर रहे हों, भाषा हमें यहाँ से वहाँ ले जा रही होती है। एक स्तर पर भाषा में सब कुछ सम्भव है : दूसरे स्तर पर बहुत कुछ है जो भाषा में असम्भव है। सम्भव से असम्भव की यात्रा भी, एक गहरे अर्थ में, यहाँ से वहाँ जाना है। यह संचयन एक तरह से एक लेखक की ऐसी ही अटपटी यात्रा की लॉगबुक जैसी है पर ऐसी जो अकसर यात्रा के कई दिनों बाद, यानी यथा समय नहीं, लिखी गयी है। उसमें स्मृतियाँ, संस्मरण, तात्कालिक प्रतिक्रियाएँ, जब-तब उभरे विचार, मेल-मुलाकात आदि सभी अंकित होते रहे हैं।



29 रतिनाथ की चाची/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020; 151पृ.

54676

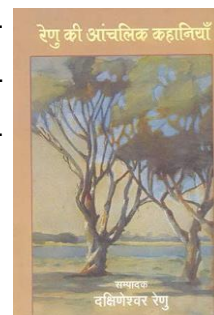
प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यासों की यथार्थवादी परम्परा में नागार्जुन सबसे समर्थ हस्ताक्षर हैं। भारतीय गाँव की शोषण से भरी जिन्दगी उनके उपन्यासों का विषय है। 'रतिनाथ की चाची' भी एक पिछड़े हुए और गरीब अंचल की यातनादायी जिन्दगी को समेटने वाला उपन्यास है। इसमें एक गरीब ब्राह्मण विधवा गौरी की जिन्दगी के माध्यम से पूरे भारतीय समाज की शोषित नारी की जीवनगाथा उद्घाटित की गयी है। उपन्यास की प्रमुख पात्र गौरी जिन मानसिक यंत्रणाओं से गुजरती है वह भारतीय समाज की सड़ी-गली परम्परा का बेरहमी से भंडाफोड़ करने के लिए काफी है। इस उपन्यास में महान कथा शिल्पी नागार्जुन की आमफहम भाषा उपन्यासों के यथार्थवादी शिल्प की नई दिशा रेखांकित करती है।



- 30 रेणू की चर्चित कहानियाँ/ रेणु, दक्षिणेश्वर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009; 128पृ.

54677

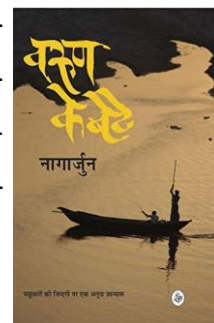
"रेणु की चर्चित कहानियाँ" दक्षिणेश्वर रेणु द्वारा लिखित कहानियों का एक संकलन है, जिसमें सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाएँ और ग्रामीण परिवेश का सजीव चित्रण किया गया है। यह पुस्तक हिंदी कहानी साहित्य के महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत करती है।



- 31 वरुण के बेटे/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020; 120पृ.

54678

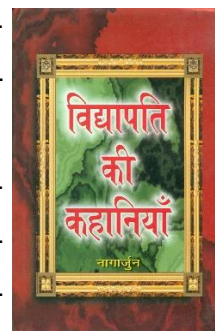
वरुण के बेटे" उपन्यास वैद्यनाथ मिश्र उर्फ नागार्जुन कृत एक आंचलिक उपन्यास है। आलोच्य उपन्यास में नागार्जुन जी ने मछुआरों की कठिन जिन्दगी का दस्तावेज प्रस्तुत किया है। यह जिन्दगी जो गरीबी और आभावों के बीच भी अपनी जिजीविषा को जीवंत रखती है। नारी पात्र मधुरी के माध्यम से नारी अस्मिता को भी उकेरने का सफल प्रयास किया है।



- 32 विद्यापति की कहानियाँ: महाकवि विद्यापति की तेरहनीतिपूर्ण कथाएँ/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 94पृ.

54679

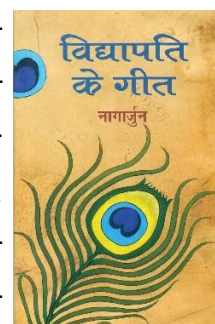
कविता, निबंध, कहानी आदि की भाँति कुछ ऐसी पुस्तकें भी हैं जो कभी छपी और आज जाने कहाँ दबी पड़ी हैं। 'नागार्जुन साहित्य' की सूची में उनका उल्लेख तक नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक भी उनमें से एक है। इसका प्रथम संस्करण 1964 में हुआ और द्वितीय 1966 में। परंतु समुचित प्रचार-प्रसार न होने से यह पुस्तक पाठकों के लिए अब तक 'दुर्लभ पुस्तकों' में से एक है। विद्यापति की कहानियों का छाया-रूपांतर उन्हीं दिनों किया गया, जिन दिनों 'विद्यापति के गीत' गद्य रूपांतर हुआ, अर्थात् 1963 में।



33 विद्यापति के गीत/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 144पृ.

54680

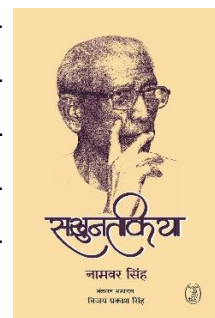
विद्यापति वैष्णव थे, या शैव थे, या शाक्त थे-समालोचकों की खींचातानी सामान्य पाठकों को अवश्य ही मनोरंजक लगेगी। विरह-शृंगार वाले ये गीत तत्कालीन सामंतवर्ग के मनोविज्ञान की सामग्री प्रतीत होते हैं। नर्तक और नर्तकियाँ भावभीनयपूर्वक इन गीतों को गाते थे। इन पदों के गीतभिनय सारी-सारी रात चलते रहते थे। राधा-कृष्ण वाले पदों में अंत वाली पंक्ति प्रायः ही आशा का संदेश देती है। मिलन होता और अवश्य होगा- इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि महाकवि किसी भी स्थिति में अपने श्रोताओं को निराश छोड़ना पसंद नहीं करता।



34 सखुनतकिया/ सिंह, नामवर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021; 163पृ.

54681

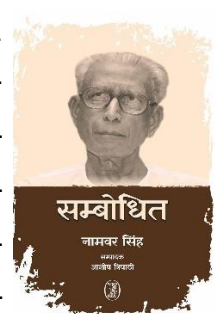
'सखुनतकिया' नामवर सिंह की एक पुस्तक है, जो उनकी आत्मकथात्मक स्मृतियों, व्याख्यानों और साक्षात्कारों का संकलन है, जिसे विजय बहादुर सिंह ने संपादित किया है; यह उनकी जीवन-यात्रा, साहित्यिक विचारों और भारतीय साहित्य में उनके योगदान को दर्शाती है, जिसमें बचपन से लेकर वरिष्ठ दिनों तक की स्मृतियाँ और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से जुड़े प्रसंग शामिल हैं, जिससे पाठक नामवर जी के 'वाचिक' (मौखिक) विचारों को जान पाते हैं।



35 सम्बोधित/ सिंह, नामवर - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023; 190पृ.

54682

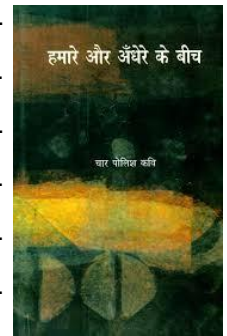
सम्बोधित - नामवर सिंह हिन्दी का चेहरा थे। उनमें हिन्दी समाज, साहित्य-परम्परा और सर्जना की संवेदना रूपायित होती थी। वे न सीमित अर्थों में साहित्यकार थे और न आलोचक। वे हिन्दी में मानवतावादी, लोकतान्त्रिक और समाजवादी विचारों की व्यापक स्वीकृति के लिए सतत संघर्षशील प्रगतिशील आन्दोलन के अग्रणी विचारक थे। वे देश में समतावादी समाज का सपना सँजोये रखने वाली सामाजिक शक्तियों के पक्ष में और सामन्तवादी-पुनरुत्थानवादी शक्तियों और पूँजीवादी-फासीवादी शक्तियों से निरन्तर मुठभेड़ करने वाले



वैचारिक योद्धा थे। बौद्धिक प्रतिभा की कौंध उनके लेखन में हर जगह व्याप्त है, परन्तु यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि परिदृश्य में प्रभावी हस्तक्षेप करने वाली और हिन्दी आलोचना में क्लासिक का दर्जा प्राप्त कर चुकी अनेक महत्वपूर्ण किताबों के बावजूद वृहद् हिन्दी समाज में उनकी ख्याति प्रायः उनके व्याख्यानों के कारण रही है। सम्बोधित उनके व्याख्यानों का संग्रह है, जिसमें नामवर जी के विचारों की व्यापकता और गहराई को साथ-साथ देखा जा सकता है।

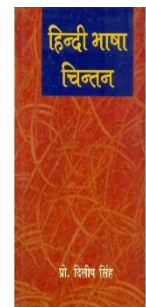
- 36 हमारे और अंधेरे के बीच: चार पोलिश कवि/ वाजपेयी, अशोक [अनुवादक]; चेकाल्स्का, रेनाता [अनुवादक] - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011; 320पृ. 54683

इससे कौन इनकार कर सकता है कि मनुष्य हर समय अँधेरे और उजाले के बीच अपनी जगह की तलाश में भटकता रहता है। बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध दूसरे महायुद्ध के भीषण नरसंहार के बाद भी बहुत सारी तानाशाहियों और अत्याचारों की गिरफ्त में रहा। संसार भर की कविता ने युद्ध के बाद की राहत के ठण्डे उजाले में बढ़ते हुए अँधेरे को पहचानने की कोशिश की। इस कोशिश में आधुनिक पोलिश कविता ने दो तानाशाहियों और मनुष्य द्वारा मनुष्य पर की जा रही क्रूरताओं और मानवीय अपमान और विडम्बना और इतिहास के विद्रूपों का प्रतिरोध करने और उनके लिए मार्मिक रूपक गढ़ने का दुस्साहस किया। उसकी अजेय कल्पनाशीलता, अदम्य जिजीविषा और भाषा को सर्वथा अप्रत्याशित इलाकों में ले जाने की रचनात्मक क्षमता ने जो कविता रची वह विलक्षण, अप्रतिम और अत्यन्त मार्मिक है। उसमें संवेदना की गहराई और वैचारिक सघनता के बीच कोई फाँक नहीं है। पोलिश विदुषी रेनाता चेकाल्स्का के साथ मिलकर ऐसे चार महाकवियों के हिन्दी अनुवाद अब एकत्र प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता है। संयोगवश 2011 चेस्लाव मीलोष की जन्मशती का वर्ष भी है।



- 37 हिन्दी भाषा चिन्तन/ सिंह, दिलीप - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009; 287पृ. 54684

हिन्दी भाषा चिन्तन - हिन्दी भाषा के रचनाकारों, पोषकों, अनुवादकों (चाहे वे किसी प्रान्त या क्षेत्र के हों) ने हिन्दी भाषा के भीतर विशाल जन-जीवन की आत्मा से बराबर तालमेल बनाये रखा है। इनको अब हिन्दी व्याकरण में उकेरना होगा। बनावटी, अनुवाद आश्रित, जन सम्पर्क से दूर होती जा रही सामर्थ्यहीन हिन्दी का तिरस्कार करना भी इस व्याकरण के लिए ज़रूरी होगा। भाषा की शुद्धता या मानकता की ईदे कर हिन्दी भाषा के स्वाभाविक विकास और प्रयोग को; कहा जाय उसकी लचीली प्रकृति या ग्रहणवादी प्रवृत्ति की आलोचना करने वाले शुद्धतावादियों से सावधान रहे बिना और भाषा सम्पर्क एवं भाषा- विकास



की स्वाभाविक व्याकरणिक परिणतियों का संकेत दिये बिना हिन्दी व्याकरण की परतों (संलमते) को नहीं टटोला सकता है। हिन्दी भाषा मात्र, 'एक' व्याकरणिक व्यवस्था नहीं है, वह हिन्दी भाषा समुदाय में व्यवस्थाओं की व्यवस्था के रूप में प्रचलित और प्रयुक्त है; इस तथ्य के प्रकाश में निर्मित हिन्दी व्याकरण ही भाषा के उन उपेक्षित धरातलों पर विचार कर सकेगा जो वास्तव में भाषा प्रयोक्ता के 'भाषाई कोश' की धरोहर हैं। कोई भी जीवन्त शब्द और जीवन्त भाषा एक नदी की तरह विभिन्न क्षेत्रों से गुज़रती और अनेक रंग-गन्ध वाली मिट्टी को समेटती आगे बढ़ती है। हिन्दी भी एक ऐसी ही जीती जागती भाषा है। इसके व्यावहारिक विकल्पों को व्याकरण में उभारना, यही एक तरीका है कि हम हिन्दी को उसकी राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका में आगे ले जा सकते हैं।

38 अँधेरे का ताला/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018; 112पृ.

54685

'अँधेरे का ताला' में ममता ने अपने चिरपरिचित परिवेश - कॉलेज की अध्यापिकाओं, छात्राओं और अन्य कर्मचारियों के जीवन - को चित्रित किया है। निराला की प्रसिद्ध कविता की पंक्तियों को सामने रखते हुए ममता ने 'अँधेरे का ताला खोलने वालों' की असलियत को अपने सुपरिचित व्यंग्य-विनोद भरी शैली में उकेरा है। शिक्षा का क्षेत्र किस तरह की उथल-पुथल का शिकार है, इसका एक दस्तावेज़ी चित्रण ममता ने इस उपन्यास में किया है और अन्त में नन्दिता और उसकी छात्राओं की हिम्मत पाठक को एक अदम्य साहस से भर जाती है। उपन्यास की खूबी यह है कि ममता ने कहीं भी उपदेश देने की कोशिश नहीं की, बल्कि इस 'अँधेरे' के अक्स खींचते हुए 'उजाले' के द्वीपों पर भी नज़र डाली है।



39 इस गुब्बारे की छाया में/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020; 107पृ.

54686

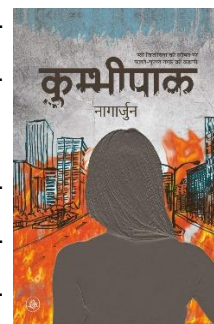
इस गुब्बारे की छाया में' नागार्जुन की एक प्रसिद्ध हिन्दी रचना (संभवतः कविता या लघु उपन्यास का हिस्सा) है, जो उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण और लोक-जीवन से जुड़े यथार्थ को दर्शाती है, और यह उनकी रचनाओं के संकलन 'वाणी प्रकाशन, दिल्ली' (1989) में प्रकाशित हुई थी, जिसमें वे आम आदमी के जीवन और प्रकृति के बिंबों का प्रयोग करते हैं।



40 कुम्भीपाक/ नागार्जुन - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012; 122पृ.

54687

कुम्भीपाक नामक नरक की रचना जिन जीवन-स्थितियों से हुई होगी, नागार्जुन का यह उपन्यास उन्हीं के शब्दांकन का परिणाम है। एक ही मन में रहनेवाले छः किरायेदारों की जीवनचर्या पर केन्द्रित यह उपन्यास हमारे 'विकासमान' नागर-जीवन के जिस सामाजिक यथार्थ की परतें खोलता है, प्रकारांतर से वह समूचे भारतीय जीवन का यथार्थ है, क्योंकि स्त्री के प्रति पदार्थवादी नजरिये की कहीं कोई कमी नहीं। आर्थिक अभावों में पिसती अनेकानेक निर्दोष जिवानेच्छाएँ किस प्रकार भोगवाद की भट्टी में झोंक दी जाती हैं, उनकी पीड़ा और मुक्तिकामी छटपटाहट को नागार्जुन ने गहरी आत्मीयता से उकेरा है। साथ ही, नागार्जुन यहाँ उस दृष्टि को प्रस्थापित करते हैं जो स्त्री की सामाजिक भूमिका और मानवीय गरिमा के प्रति सचेत है।



41 बोलने वाली औरत/ कालिया, ममता - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012; 91पृ.

54688

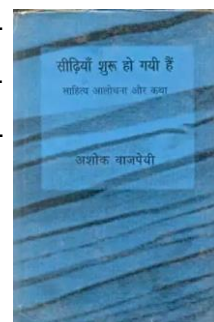
ममता कालिया के रचना लोक में दो तरह की छवियाँ प्रमुख हैं। एक में हमारे भारतीय समाज के मध्यवर्ग की स्त्रियाँ और उनका दुःख है। दूसरे में सामान्य जीवनानुभव हैं। ममता कालिया महिला त्रासदी के स्थूल रूपों को अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं बनातीं। जरूरत पड़ने पर वह त्रासदी की कुछ परंपरागत स्थितियों को शामिल करती हैं किन्तु ज्यादातर वह कठिन मगर बेहतर प्रणाली उपयोग में लाती हैं। उनकी दिलचस्पी सूक्ष्म स्तरों और गहरे प्रभावों-प्रतिक्रियाओं को उद्घाटित करने में दिखती है। ममता कालिया ने इन कहानियों को महिलावादी क्रोधी भंगिमा से नहीं रचा है, न ही इनमें औरतों के प्रति अबोध आकुलता आकुलता है। ये गुस्से और भावुकता से पृथक निर्भर और निस्संग तरीके से यथार्थ को हाजिर करती हैं। वस्तुतः उनकी कहानियाँ नारीवाद न होकर नारी के यथार्थ की रचनाएँ हैं



42 सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं/ वाजपेई, अशोक - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014; 136पृ.

54689

"सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं" अशोक वाजपेयी द्वारा लिखित एक पुस्तक है, जो मुख्य रूप से उनकी कविताओं और विचार-यात्रा का संकलन है, जिसमें उन्होंने अपने जीवन की साहित्यिक यात्रा के उतार-चढ़ावों (सीढ़ियाँ) को दर्शाया है, जो उनके अनुभव और अंतर्दृष्टि का प्रतिबिंब है।



लेखक/संपादक अनुक्रमणिका

लेखक/संपादक	क्रं.सं.
कालिया, ममता	2, 3, 5, 13, 15, 22, 38, 41
चेकालस्का, रेनाता [अनुवादक]	36
ज्ञानरंजन, कमला प्रसाद [संपादक]	1
नागार्जुन	6, 7, 8, 9, 10, 11, 19, 27, 29, 31, 32, 33, 39, 40
रेणु, फणीश्वर नाथ	18
रेणु, दक्षिणेश्वर	30
वाजपेई, अशोक	4, 17, 20, 28, 36, 42
सिंह, दिलीप	23, 24, 25, 26, 37
सिंह, नामवर	12, 14, 16, 21, 34, 35

कीवर्ड अनुक्रमणिका

कीवर्ड	क्रं.सं.
अंतर्दृष्टि	42
अंधविश्वास	8
अनुवाद संकल्पना	25
अप्रत्याशित भाषा	36
अभिसार-लीला	7
अमूर्त अवधारणाएँ	16
अर्थवत्ता	12
आकर्षक शैली	22
आंचलिक उपन्यास	19
आधुनिक चिन्तक	23
आर्थिक अभाव	40
उतार-चढ़ाव	42
उपयोगी पुस्तक	16
एकांत चिंतन	14
कथा शिल्प	29
कथा-समीक्षा	1
कथा-साहित्य	1
कबीर-परंपरा	6
कल्पनाशीलता	36
कविता	39

कहानियाँ	11
कहानी संकलन	30
कहानी संग्रह	15
काव्य-चिंतन	4
कुम्भीपाक	9
गरीब जीवन	19
गीतभिनय	33
गुण-दोष	21
ग्रामीण जीवन	6, 8
चर्चित कहानियाँ	30
छाया-रूपांतर	32
जिजीविषा	31
जीवन-दृष्टि	4
जीवन-यात्रा	34
जीवनधर्मिता	5
जीवन्त शब्द	37
दस्तावेज़ी चित्रण	38
दुर्लभ पुस्तक	32
दृष्टि और चेष्टा	20
नागार्जुन साहित्य	32
नाटक	18
नारी अस्मिता	31

नारी यथार्थ	41
निबंध	11, 18
पाठ विश्लेषण	25
पाठक यात्रा	28
पाश्चात्य आलोचना	16
पूर्वमेघ	27
पोलिश कवि	17
प्रगतिशील आन्दोलन	35
प्रगतिशील दृष्टिकोण	39
प्रश्नाकुलता	4
प्रेम-संबंध	27
प्रेम-प्रतिरोध	5
बनारस	14
बाल्यकाल	19
बिम्ब-कल्पना	12
बीसवीं शताब्दी	17
बौद्धिक आधार	20
बौद्धिक प्रतिभा	35
बौद्धिक विमर्श	23
भारतीय गाँव	29
भारतीय जीवन	40
भारतीय मध्यवर्ग	41

भाषा	24
भाषा शिक्षण	26
भाषाई कोश	37
मधुर काव्य	7
मध्यवर्गीय स्त्री	13
महागाथा	9
महिला पात्र	15
मानवीकरण	3
मानवीय क्रूरता	36
मानवीय गरिमा	40
मानवीय बुराई	17
मानस-छवि	23
मैथिली कविताएँ	10
रचना-लोक	41
रचनाकार	21
राधा-कृष्ण	33
लघु उपन्यास	39
लघुकथा	2
विरह-शृंगार गीत	33
वैचारिक योद्धा	35
व्यक्तित्व विकास	26
व्यंग्य-विनोद	38

व्याकरण	24
व्याख्यान	34
शहरी जीवन	2
शिक्षा क्षेत्र	38
शोषण	9
शोषित जीवन	29
संगीत-संसार	20
संदेशवाहक	27
संप्रेषण	24
समर्थ भाषा	12
संस्कृत काव्य	7, 10
संस्मरण	11, 18, 25, 28
सहृदय	21
साक्षात्कार	1, 34
सामाजिक मुद्दे	15
सामाजिक यथार्थ	6, 30
सामाजिक व्यंग्य	2
सामाजिक शोषण	8
सामाजिक संरचना	13
साहित्य शिक्षण	26
साहित्यिक डायरी	14
साहित्यिक यात्रा	42

स्त्री अस्मिता	22
स्त्री-पुरुष संबंध	13
स्त्री-विमर्श	3, 22
स्त्री-शिक्षा	3
स्मृतियाँ	28
हर्ष-विषाद	5
हिंदी उपन्यास	31
हिन्दी कविताएँ	10
हिन्दी भाषा	37
